Vantage: Journal of Thematic Analysis **ISSN: 2582-7391**
A Multidisciplinary Publication of Centre for Research,
Maitreyi College, University of Delhi
April 2020, Volume 1, Issue 1

मूल शोधलेख

युवा वर्ग पर बढ़ता सिनेमा का प्रभाव

मीनू कुमारी*, स्नेह लता, प्रिया, नेहा, अपराजिता, शुभ्रा
हिन्दी विभाग, मैत्रेयी महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली-110021
***सम्पर्कसूत्र** : ईमेल : meenu420421@gmail.com

शोध–सार (ABSTRACT)

सिनेमा मानव जीवन को पर्दे पर साकार करने की कला का नाम है। आज सिनेमा युवा वर्ग के दिलों की धड़कन बन चुका है। यह वह कला है, जिसका प्रभाव व्यापक स्तर पर होता है। किसी कला के प्रभाव सकारात्मक भी होते हैं और नकारात्मक भी। सिनेमा के विषय में भी यह बात कही जा सकती है। बॉर्डर, भाग मिल्खा भाग, मैरी कॉम, दामिनी, कर्मा, उरी जैसी प्रेरणादायक फिल्में किसी समाज की दिशा बदलने में सक्षम हैं, किंतु सकारात्मक प्रभावों की गति प्रायः धीमी होती है, जबकि नकारात्मक प्रभाव महामारी की भाँति व्यापक प्रभाव छोड़ते हैं। प्रस्तुत शोध विषय इसी नकारात्मक प्रभाव के प्रति समाज को सतर्क करने के उद्देश्य से चुना गया है। सिनेमा का एक पहलू निश्चित रूप से समाज के निर्देशन और निर्माण में सहायक है, किंतु दूसरा पक्ष युवा वर्ग को उसके नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक मूल्यों, भाषा और उसकी अपनी जीवनशैली से कहीं ना कहीं काट रहा है, जो एक विचारणीय विषय है।

शुरू से अब तक के फिल्मी सफर पर यदि दृष्टि डाली जाये तो यह ज्ञात होगा कि मनोरंजन के साथ-साथ जिन जीवन मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत को फिल्मी जगत लेकर चला था, समाज के जिस प्रतिबिम्ब को पर्दे पर उतारने का दायित्व वह पूरा कर रहा था, धीरे-धीरे उस पर व्यावसायिकता हावी हो चुकी है। अधिक से अधिक लोकप्रियता पाने के लिए फिल्मों का भाषायी स्तर गिरता जा रहा है। क्लब कल्चर और **मदिरोन्मत्त** प्रदर्शन फिल्मों का चलन बन चुका है, और यही चलन युवा वर्ग को अपनी ओर खींच कर समाज को दूषित कर रहा है। इतना ही नहीं आपराधिक गतिविधियाँ भी फिल्मों में बढ़ती जा रही हैं। परिस्थितियों का सहारा लेकर नायक में वे सभी तत्व समाहित हो चुके हैं, जो एक खलनायक में होते हैं। इसके अलावा सात्विक प्रेम के स्थान पर लिव इन जैसी अवधारणाएँ जन्म ले रही हैं, जिसका परिणाम विषम हो सकता है। कुछ इसी प्रकार के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को इस विषय के अंतर्गत समेटने का प्रयास किया गया है।

कूटशब्द : युवावर्ग, सिनेमा, नायक, प्रभाव, मूल्य।

Original Research Article

Increasing Impact of Cinema on Youth

Meenu Kumari*, Sneh Lata, Priya, Neha, Aparajita and Shubhra

Department of Hindi, Maitreyi College, Chanakyapuri, New Delhi

***Correspondence:** meenu420421@gmail.com

ABSTRACT

Cinema is an art of showcasing human life on screen. Similar to all other art forms, cinema can have both positive and negative effects on youth. Inspirational films like Border, Bhaag Milkha Bhaag, Mary Kom, Damini, Karma, Uri etc., are capable of changing the direction of a society. However, positive effects are often slow to set in, while the negative effects are wide spread like an epidemic. The present article discusses the negative effects of films and attempts to alert the society about these. The negative impact of films on your youth including their alienation from moral and cultural values is indeed a matter of concern. Due to increased commercialization, the standards of cinema has deteriorated, and the use of vulgar language and lifestyle has become more common. Many of the negative qualities associated with the villains in the past have now become a part of the hero's character. Concepts like "live-in" have replaced the platonic love of the yore which might have an adverse effect on the society.

Key words: Youth, Cinema, impact, hero

1. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

सिनेमा एक जीवंत दृश्य-श्रव्य माध्यम है, जिससे अछूता रह पाना आज के युग में बहुत कठिन है। युवाओं पर इसका प्रभाव विशेष रूप से देखने को मिलता है। युवा वर्ग पर बढ़ता सिनेमा का प्रभाव, सिनेमा जीवन की कटु सच्चाइयों की वह रूपांतरित परिकल्पना है, जिसका आश्रय पाकर दर्शक भाव-विभोर हो जाता है। काल्पनिक धागों से बुनी इस दुनिया में एक पल के लिए सब कुछ सुलभ लगने लगता है। जीवन की आपा-धापी से जब कुछ क्षण चुराकर हम सिनेमा देखते हैं, तो यथार्थ के संघर्षों से आहत हमारा मन अवश्य ही विश्राम पाता है। इस रूप में सिनेमा मनोरंजन का एक सशक्त साधन है। किंतु यह विषय इतना सामान्य नहीं है, जितना सतही तौर पर दिखाई देता है। फिल्में बनती हैं, फिल्में हिट होती हैं, फ्लॉप होती हैं। हीरो न.-1 कौन है, उसकी आने वाली फिल्में कौन सी हैं, यह सिनेमा से जुड़ी कुछ सामान्य चर्चाएं हैं, जो हमें अक्सर सुनने को मिलती हैं।

किंतु सिनेमा के गहरे प्रभावों से हम अनभिज्ञ रहते हैं। हम इस बात से बेखबर रहते हैं कि हम सिनेमा को अपने साथ ले आए हैं। वह हमारे साथ-साथ चलता है, हमारे साथ-साथ उठता, बैठता है, हमसे बात करता है। महाविद्यालय

में कक्षा में भी सिनेमा हमारे साथ चला आता है। यहाँ तक कि जब हम पढ़ रहे होते हैं, तब भी सिनेमा हमारे साथ बैठा होता है। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि सिनेमा हममें प्रवेश कर चुका है। हम अपने चहेते अभिनेता को जिस रूप में देखते हैं, उसी का अनुकरण करना चाहते हैं।

2. सामग्री और कार्यप्रणाली (MATERIALS & METHODOLOGY)

प्रस्तुत शोध-कार्य में विषय के बहुमुखी प्रभावों का गहनता के साथ विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है। युवा वर्ग पर पड़ने वाले सिनेमा के प्रभावों का सूक्ष्म अन्वेषण किया गया है। मात्रात्मक के स्थान पर गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए किया गया है। शोध को अधिक से अधिक अंतर-संवादात्मक बनाने का प्रयास किया गया है। ऐसे स्रोतों से संपर्क किया गया है, जो हमारे आस-पास ही उपलब्ध हों, जिससे शोध का स्वरूप अधिक से अधिक सहज बन सके। इसके लिए हमने अलग-अलग महाविद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों का साक्षात्कार लिया क्योंकि विषय की आवश्यकतानुसार युवा वर्ग किस प्रकार की फिल्में पसंद कर रहा है, यह जानना आवश्यक है।

शोध कार्य के अन्तर्गत हमने अन्वेषणात्मक भ्रमण किया, जिसमें हमने नशा मुक्ति केन्द्रों, पुलिस थानों और क्राइम ब्रांच में जाकर समाज में बढ़ रही आपराधिक गतिविधियों को जानने का प्रयास किया। अन्वेषण की दृष्टि से हमने बहुत सारी फिल्में भी देखीं, पुस्तकों का अध्ययन भी किया। इसके साथ समाचारपत्रों के माध्यम से हमने फिल्मी तर्ज़ पर हो रहे अपराधों का भी पता लगाया। इन सब साधनों की विस्तृत जानकारी संदर्भ सूची में दी गई है।

3. शोध-कार्य (RESEARCH WORK)

जीवन ऊर्जा का महासागर है और ऊर्जा कला को जन्म देती है। कवि रवींद्रनाथ ठाकुर के अनुसार, "कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है।" फिर वह संगीतकला, नृत्यकला, शिल्पकला अथवा मूर्तिकला कोई भी हो, मन को अवश्य भाती है। सिनेमा एक ऐसा माध्यम है, जहाँ अभिनय कला जीवंत हो उठती है। और फिल्म अभिनय, श्रृंगार संगीत और कौतूहल से भरी वह यात्रा है, जो जीवन के हर मोड़, उतार-चढ़ाव और गलियों से गुजर कर पूरी होती है। सिनेमा एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है, इसमें सभी कलाएँ एक साथ समाहित हैं। इसलिए दर्शकों को फिल्में सबसे अधिक प्रभावित करती हैं। और युवाओं पर इसका प्रभाव बहुत गहरा होता है। सिनेमा का प्रभाव सकारात्मक रूप में भी देखा जा सकता है और नकारात्मक रूप में भी। सकारात्मक रूप में सिनेमा युवाओं को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। विपरीत परिस्थितियों से जूझने की ताकत देता है और युवा अपने लिए नए मार्ग खोजने निकल पड़ते हैं। मैरी कॉम,

भाग मिल्खा भाग, चक दे इंडिया, एम.एस. धोनी, सुल्तान और दंगल ऐसी ही फिल्में हैं। गीता व बबिता फोगाट पर बनी फिल्म 'दंगल' के एक संवाद "म्हारी छोरियाँ छोरों से कम हैं के" ने सारी छोरियों को छोरों से आगे खड़ा कर दिया। इन फिल्मों को देखकर अवश्य ही युवाओं में खेल भावना निर्मित हुई। उन्हें सही दिशा मिली। इसी प्रकार बॉर्डर, एल.ओ.सी. कारगिल, क्रांति, इंडियन, सरफरोश, फोर्स और परमाणु जैसी राष्ट्रभक्ति की फिल्मों ने अवश्य ही युवाओं की देशभक्ति की भावना को पुष्ट किया। नारी-अस्मिता से संबंधी फिल्मों दामिनी, राजा की आएगी बारात, खून भरी माँग और शेरनी ने समाज को नारी सशक्तिकरण का पाठ पढ़ाया। इसी प्रकार पैडमैन और टॉयलेट एक प्रेमकथा ने जनसामान्य को जागरुक किया। सिनेमा की यह सकारात्मकता सराहनीय है।

जहाँ तकनीकों का विकास राष्ट्र की उन्नति के लिए किया जाता है, वहीं युवा आजकल अपराध के लिए भी इसका बहुतायत से दुरुपयोग कर रहे हैं। इसके साथ ही नए दौर में सिनेमा कुछ ऐसे असामाजिक तत्वों को बढ़ावा दे रहा है, जो युवाओं को पथभ्रष्ट कर रहे हैं। फिल्मों में बढ़ती नकारात्मक भूमिकाओं से हीरो की छवि धूमिल हो रही है। इस विषय पर राजेंद्र सहगल का यह लेख 'फिल्मों में नकारात्मक चरित्रों की प्रतिष्ठा खतरनाक है' महत्वपूर्ण है, जो उनकी पुस्तक 'सिनेमा वक्त के आईने में', में समाहित है। उन्होंने लिखा है- "पहले की फिल्मों में किसी नायक का शराब पीना या सिगरेट पीना भी काफी कम दिखाया जाता था लेकिन धीरे-धीरे नायक का यह चेहरा धूमिल होता गया और उसकी जगह एक ऐसा चरित्र उभरा जो अपने लक्ष्य को पाने के लिए साधन की पवित्रता की ज़रा भी परवाह नहीं करता"।

उनका मानना शत प्रतिशत सही है। जब सबके दिल में बसने वाला शाहरुख खान डर, अंजाम और बाज़ीगर जैसी फिल्मों में नकारात्मक भूमिका में दिखता है, तो हम उसे खलनायक मानने के लिए तैयार ही नहीं होते अपितु वह हमारी सहानुभूति का पात्र बन जाता है और उसके द्वारा किए गए अपराध हमें जायज़ लगने लगते हैं। यह वह हिट फिल्में हैं, जो युवा शक्ति द्वारा बहुत पसंद की गई और सड़कों, महाविद्यालयों और पार्टियों में लड़के 'क ककक..कक किरन' कहने की एक्टिंग करते खूब नज़र आए। इन फिल्मों का प्रस्तुतीकरण इतनी खूबसूरती से हुआ है कि इनमें हमें कोई बुराई नज़र नहीं आती और धीरे-धीरे आपराधिक प्रवृत्तियों ने समाज में पैर पसारने शुरू कर दिए। वे रंगमंच और वास्तविक जीवन का अंतर पहचानना भूल गए हैं। फिल्मों की चकाचौंध से प्रभावित होकर वे सिगरेट के धुएँ में जीवन खोजने निकल पड़े हैं। फिल्मी दुनिया का झाँसा देकर कितनी ही लड़कियाँ शरीर व्यापार के उद्देश्य से दुनिया के किन कोनों में पहुँच जाती हैं, किसी को भनक तक नहीं लगती। समाज में चल रही लिव इन जैसी खोखली व्यवस्थाओं के पीछे सिनेमा बहुत बड़ा कारण है। जिसमें फंसकर लड़कियाँ न केवल पुरुषों की अवसरवादिता का शिकार बनती हैं, बल्कि आपत्तिजनक स्थितियों में आत्महत्या के लिए भी तत्पर होती हैं। यदि बाजार पर एक विहंगम दृष्टि डाली जाए तो

उन पर भी सिनेमा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। हेट स्टोरी 3, जन्नत, डर्टी पिक्चर, तमाशा, जिंदगी न मिलेगी दोबारा, राज़ और अजनबी जैसी फिल्मों में कामुक दृश्यों, गिरते नैतिक मूल्यों, नशाखोरी व हिंसात्मक दृश्यों की भरमार है।

असंख्य युवाओं ने अपराध का पहला पाठ फिल्मों से ही सीखा है। आजकल युवा सिनेमा को देखकर ही अपराध करने के नए-नए तरीके विकसित कर रहे हैं। 1980 से पूर्व जो फिल्में बनी उनमें गोली, बंदूक और डाकू का नाम सुनकर मन में भय उत्पन्न होता था क्योंकि इनका इस्तेमाल सिर्फ खलनायक द्वारा होता था। 'शोले' और 'मेरा गाँव मेरा देश' जैसी फिल्में इसके सशक्त उदाहरण हैं। धीरे-धीरे जब हीरो की छवि में परिवर्तन आना शुरू हुआ तो हीरो स्वयं हथियारों से लैस नज़र आने लगा और स्वाभाविक रूप से दर्शकों का आदर्श बनने लगा। वास्तव, वेलकम, अपहरण और राजनीति जैसी फिल्मों में बदमाशों के रुतबे को देखकर युवक उनके गैंग के साथ जुड़ने में अपने आप को अधिक सफल मानते हैं। इसी संबंध में हमने क्राइम ब्रांच के एक एस.आई. मुकेश लाकड़ा जी से बात की। उनके अनुसार," बदमाशों से हमारी बहुत बार व्यक्तिगत रूप से बात हुई है। उन्हें अपने जीवन से कोई मलाल नहीं। हजारों युवक उनसे जुड़ने के लिए लालायित रहते हैं। एक बदमाश शिवा सूर्य की रिहाई के बाद उसके लिए गोयला डेयरी में 24 जून 2019 को एक वेलकम पार्टी रखी गई जहाँ से पुलिस ने 65 बदमाशों को धर दबोचा। रोहिणी थाने में कार्यरत एक पुलिसकर्मी हितेश वत्स ने हमें जानकारी दी कि "हथियारों को लेकर यूथ के मन में जरा भी भय नहीं है। अपराध पर काबू पाने की पुलिस पूरी-पूरी कोशिश कर रही है।" इस वेलकम-पार्टी के पीछे कहीं ना कहीं 'वेलकम' फिल्म प्रेरणा के रूप में रही है। इस सिलसिले में हमने चाणक्यपुरी थाने के आई.ओ. अविनाश राजपूत से भी बात की। उन्होंने हमें बताया कि "यह पॉश इलाका है, किंतु सम्राट होटल तथा होटल में चलने वाली पार्टीज में हमें छोटी-मोटी घटना पर कई बार जाना पड़ा है"। उन्होंने हमें यह भी बताया कि यहाँ बदमाश 19, 20 साल के लड़कों को नशीली दवाएँ भी उपलब्ध कराते हैं और यह लड़के उनके लिए हर प्रकार का कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस प्रकार हथियार अपराध और नशा यह तीनों ही तत्व समाज को दूषित करते जा रहे हैं और यह तीनों ही तत्व सिनेमा में भरपूर मात्रा में देखने को मिलते हैं। फिल्मों में क्लबकल्चर दिखाना बिल्कुल आम हो चुका है। इसकी तर्ज़ पर महाविद्यालयों के आसपास खूब क्लब खोले जा रहे हैं, जिनमें महाविद्यालय की छात्र-छात्राएं डांस पार्टी, बर्थडे पार्टी, फ्रेशर पार्टी, कॉकटेल पार्टी और बैचलर पार्टी आदि मनाने जाते हैं। पुलिस इन क्लबों में चलने वाली अवैध गतिविधियों से वाकिफ तो हैं, किंतु व्यावसायिक उद्देश्यों के कारण इनकी छानबीन नहीं की जाती। कुछ बच्चे तो नशे के इतने आदी हो जाते हैं कि इन्हें नशामुक्ति केंद्रों में भर्ती करवाना पड़ता है। न्यू मॉर्निंग नशा मुक्ति केंद्र में बात-चीत से हमें पता चला कि गौरव मिश्रा नाम का एक 16 वर्षीय लड़का, जो कि पढ़ाई

में होशियार था 12वीं कक्षा में में अनुपस्थित रहकर दोस्तों के साथ फिल्म देखने जाता था। धीरे-धीरे उसने शराब पीना भी शुरू कर दिया। रोजाना शराब पीना और पार्टी में मारपीट करने का सिलसिला शुरू हो गया। इसके बाद उसे 8 अप्रैल 2019 को नशामुक्ति केंद्र में भर्ती किया गया। इतना होते हुए भी उसने 12वीं में 82% अंक प्राप्त किए। दुःख का विषय यह है कि इतना होनहार छात्र जो समाज के लिए अद्भुत मानव संसाधन हो सकता था, नशे की गिरफ्त में आकर भटक गया। आए दिन हमें हर गली व मोहल्ले में बाल अपराध देखने को मिलते हैं, जिससे युवा अपनी तो छवि बिगाड़ ही रहे हैं, साथ ही समाज की भी छवि बिगाड़ रहे हैं।

"धूम्रपान एवं तंबाकू सेहत के लिए हानिकारक है" ऐसा किसी मुकेश के कह देने से या फिर फिल्मों में पट्टियाँ चलाने से कि "शराब जानलेवा है" युवा मान नहीं जाएंगे। पिछले कुछ वर्षों में रोडरेज की घटनाओं का प्रतिशत भी बढ़ा है जो युवाओं के नैतिक पतन, मानवीय मूल्यों के हनन और अतिवाद का परिचायक है। फिल्मों में दर्शकों के प्रिय कलाकार जब बात-बात पर रिवाल्वर निकालते हैं, तो वही प्रवृत्ति युवाओं में असल जिंदगी में दिखाई देती है। उनके जीवन की संवेदनाएं समाप्त हो रही हैं। जो संस्कार उन्हें विरासत में मिले हैं, वे उनके लिए बंधन बनते जा रहे हैं। वे अपने चहेते कलाकारों के संवाद बोलने में तो बड़ा गर्व महसूस करते हैं, उनके मर्म को समझने में नहीं।

आजकल फिल्म-निर्माण की नई पद्धति शुरू हुई है, जिसके तहत वेब सीरीज बनने लगी हैं। इनमें से कुछ बहुत अच्छी भी हैं, जैसे नेटफ्लिक्स (Net Flix), अमेजॉन प्राइम (Amazon Prime), ज़ी 5 (Zee 5), वी लाइव-एप्स (V Live-Apps) इस प्रकार की सीरीज उपलब्ध कराते हैं। किंतु कुछ वेब सीरीज हिंसा और सैक्सुअल मनोवृत्तियों को जन्म देती हैं। अक्सर बच्चे माता-पिता से नज़र बचाकर यह फिल्में मोबाइल पर देखते हैं, जिसके परिणाम दुष्कर हो सकते हैं। सिनेमा के प्रभाव में आकर ही आजकल युवा बहुत जल्दी सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, लग्ज़री जीवन जीना चाहते हैं, रातों रात करोड़पति होना चाहते हैं। यह वह युवा वर्ग है, जो मेहनत करके आगे नहीं बढ़ना चाहता बल्कि शॉर्टकट अपनाकर अमीर बनना चाहता है। आए दिन समाचारपत्रों में हमें ऐसी खबरें पढ़ने को मिल जाती हैं, जो आज के युवाओं के लोभग्रस्त मनोदशा का निदर्शन हैं, जैसे–

1. 6 जून 2019 नवभारत टाइम्स
   लग्ज़री ज़िन्दगी जीने के लिए बन गए बदमाश ।
2. 8 जून 2019
   MBBS में एडमिशन कराने वाले गैंग ने स्टूडेंट से 84 लाख रु. ठगे ।
3. 9 जून 2019

लूटते थे बटन वाले चाकू से दोनों पुलिस की गिरफ्त में ।

4. 10 जून 2019

   हिट एंड रन ।

5. 11 जून 2019

   ए.टी.एम काड्र्स की क्लोनिंग, कई के अकाउंट हुए खाली।

6. 11 जून 2019

   स्नैचर्स ने पहले शराब पिलाई, फिर तोड़ी चैन ।

7. 10 जून 2019

   हिट एंड रन: स्कूटर सवार को टक्कर मारकर फरार, चली गयी जान ।

4. परिणाम (RESULTS)

युवा पीढ़ी पर सिनेमा के दूरगामी प्रभावों को नकारा नहीं जा सकता। जिस प्रकार का परिवर्तन युवा पीढ़ी में देखने को मिल रहा है और जिस तीव्र गति से यह परिवर्तन युवाओं में संक्रमित हो रहा है, उसे रोकना बहुत आवश्यक है। सिनेमा के गीतों की गूँज, उसके संगीत की झनझनाहट, अभिनय की कलात्मकता और नायक-नायिका की रूप छवि हमारे मन को अवश्य ही बहुत भाती है। किंतु इस पर प्रदर्शित होने वाले खुले अश्लील दृश्य, क्लब-कल्चर, अपराध को प्रेरित करते सीन, हथियारों की अनावश्यक धड़-धड़ाहट, भाषा का भद्दापन, अलगाववादी जीवन शैली और विदेशी संस्कृति की नकल कहीं युवा पीढ़ी की मानसिकता को विकृत ना कर डाले क्योंकि युवा पीढ़ी युवा शक्ति है और किसी राष्ट्र के निर्माण का दायित्व मुख्य रूप से युवा शक्ति के कंधों पर ही होता है।

5. चर्चा (DISCUSSION)

सिनेमा जगत के पहलुओं पर पर्याप्त तथ्य प्रस्तुत किए जा चुके हैं। अब इन विषयों का सार्वजनिक होना आवश्यक है। कुछ समय तक फिल्मी-सफर समाज का प्रतिबिंब तथा इसका मार्गदर्शक था, किंतु उसके पश्चात विषय की माँग कहकर ऐसे दृश्य फिल्मों में आने लगे जिससे समाज से मानवधर्मिता बिल्कुल समाप्त हो चुकी है। समाज में अवसरवाद, धोखा, बनावटीपन, दिखावा, पश्चिम का अंधानुकरण, सेक्स, नशाखोरी और अपराध अपने पैर पसार रहा है। जब हमारा प्रिय अभिनेता आर्थिक अभाव झेलता है, तो उससे हमें सहानुभूति होती है। उसकी माँ मरती है, तो हमारा हृदय द्रवित हो उठता है और उसकी बहन को जब बदमाश परेशान करते हैं, तो हम खलनायक के दुश्मन बन जाते हैं। जब अभिनेता

जिंदगी और मौत की जंग लड़ता है, तो हमारी साँसें थम जाती हैं। यहाँ तक अभिनेता हमारा भगवान बन चुका है और जब वही प्रिय अभिनेता बार-बार जाम छलकाता नज़र आता है और डॉन बनकर ऐशोआराम की जिंदगी जीता है, तो दर्शक एकदम कैसे इतना परिपक्व हो सकता है कि उसे केवल अभिनय मान ले और उससे प्रभावित ना हो। यह कभी नहीं हो सकता। ऐसे में जिन युवाओं को जीवन में सही मार्गदर्शन नहीं मिलता वह अवश्य ही भटक जाते हैं।

6. प्रासंगिकता (RELEVANCES)

सिनेमा जैसे बड़े परदे का प्रयोग युवा शक्ति को सकारात्मक दिशा देने के लिए हो सकता है। एक अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार- "भारतीय बहुत जल्द प्रभाव में आते हैं और उनमें पोटेंशियल ऊर्जा बहुत अधिक है, जो कम साधनों के साथ भी अधिक कार्य कर सकते हैं।" इसलिए सिनेमा जैसी राष्ट्रव्यापी प्रस्तुति युवाओं की दिशा न बदल दे, इस दृष्टि से सिनेमा पर विचार करना अति आवश्यक है।युवा शक्ति को सही दिशा मिलना आवश्यक है, जिसके लिए इस प्रकार के विषयों का बहुत महत्व है। युवा शक्ति ही जनशक्ति है। देश का असीम मानव-संसाधन, उनकी मानसिकता के कारणों को खोजना आवश्यक है। सिनेमा की भूमिका को और अधिक सशक्त बनाने के लिए विषय की प्रासंगिकता है। सिनेमा की नकारात्मकता को समाप्त करने के लिए सेंसर बोर्ड की सक्रिय भागीदारी हो सकती है। इसलिए ऐसे विषयों को मंच मिलना आवश्यक है।

7. उपसंहार (CONCLUSION)

'युवा वर्ग पर बढ़ता सिनेमा का प्रभाव' इस विषय पर प्रकाश डालना युवा शक्ति को आत्ममुग्धता की अपेक्षा सामाजिक सरोकारों से जोड़ना है। फिल्म जगत की कामुकता पर जब बात होती है, तो कुछ नामी हस्तियाँ इसे फिल्म की माँग कहकर दायित्व-मुक्त हो जाती हैं। किंतु उनकी व्यवसायिक छुपी दृष्टि जग-जाहिर नहीं है। इस प्रकार के विषयों का चुनाव फिल्मी दुनिया की व्यवसायिकता और कलात्मकता का समायोजन करना है। फिल्म जगत के सांस्कृतिक पहलू पर यदि दृष्टि डालें तो वह हमारी विरासत को दीमक की तरह खोखला कर रहा है। विदेशी सभ्यता का मोह युवाओं के खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा व भाषा पर साफ झलकता है। जो अवश्य ही चिंता का विषय है। युवा शक्ति, वह जनशक्ति है, जिसके हाथों में भविष्य का बिगुल है, जिसकी रचनाधर्मिता, अन्वेषणात्मकता व दृढ़ता विश्व-स्तर पर उसे अग्रणी स्थान दिला सकती है। किंतु वह परंपरा को रौंदकर आधुनिकता का महल खड़ा करना चाहता है। इस शोध कार्य का उद्देश्य उसे चेताना है कि जिसके पैर अपनी जमीन से उखड़ जाते हैं, अधर में लटकना उसकी मजबूरी बन जाती है।

8. पारस्परिक सहमति (CONFLICTS OF INTEREST)

प्रस्तुत शोधपत्र सभी लेखकों के सामूहिक परिश्रम का प्रतिफल है। जिसे लेकर इसके लेखकों में कोई मतभेद नहीं है, और भविष्य में भी यह लेख सभी प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप से सर्वथा मुक्त रहेगा।

9. वित्तीय अनुदान (FUNDING)

यह शोधकार्य मैत्रेयी महाविद्यालय से प्राप्त वित्तीय अनुदान से सुसम्पन्न हुआ है।

10. अभिस्वीकृति (ACKNOWLEDGEMENT)

सर्वप्रथम अपने महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. हरित्मा चोपड़ा के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना हमारा परम कर्तव्य है, जिनकी प्रेरणा एवं कुशल निर्देशन में यह परियोजना कार्य अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त हुआ। मैत्रेयी शोधकेन्द्र का भी आभार, जिन्होंने सर्वथा नूतन एवं अति उपयोगी विषय पर परियोजना कार्य करने का सुअवसर प्रदान किया।

11. संदर्भ (REFERENCES)

11.1 पुस्तकें

[01.] सहगल, राजेंद्र, (2011). *सिनेमा वक्त के आईने में,* संजय प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.-11

11.2 संबंधित व्यक्तियों या संस्थाओं से साक्षात्कार

[01.] अविनाश राजपूत, थाना चाणक्यपुरी।

[02.] नवीन, अधिकारी, न्यू मॉर्निंग नशा मुक्ति केंद्र, कानपुर।

[03.] मुकेश लाकड़ा, एस.आई. क्राइम ब्रांच।

[04.] हितेश वत्स, कॉन्स्टेबल, रोहिणी थाना ।

11.3 अन्वेषणात्मक भ्रमण

[01.] चाणक्यपुरी पुलिस थाना

[02.] जीसस एंड मैरी महाविद्यालय

[03.] रोहिणी पुलिस थाना

[04.] सत्य निकेतन (लॉन्ज)

[05.] सत्य निकेतन स्थित पी.जी.

11.4 फिल्म-दर्शन

[01.] आखिर क्यों, 30 अगस्त 1985 – जे. ओम प्रकाश

[02.] इंडियन, 1996 – एन. महाराजन

[03.] उरी, 11 जनवरी 2019 - आदित्य धर

[05.] कर्मा, 8 अगस्त 1986 - सुभाष घई

[06.] कॉरपोरेट, 7 जुलाई 2006 - मधुर भंडारकर

[06.] क्रांति, 3 फरवरी 1981 - मनोज कुमार

[07.] खून भरी मांग, 12 अगस्त 1988 - राकेश रोशन

[08.] डर्टी पिक्चर, 2 दिसम्बर 2011 - मिलन लुथ्रिया

[09.] चक दे इंडिया, 10 अगस्त 2007 - शिमित अमीन

[10.] जन्नत, 4 दिसम्बर 2017 - कुनाल देशमुख

[11.] जिंदगी न मिलेगी दोबारा, 15 जुलाई 2011 - ज़ोया अख्तर

[12.] टाइगर जिंदा है, 22 दिसंबर 2017 - अली अव्वास जफर

[13.] टॉयलेट एक प्रेम कथा, 11 अगस्त 2017 - श्री नारायण सिंह

[14.] दंगल, 25 दिसंबर 2011 - नितेश तिवारी

[15.] दबंग, 10 सितम्बर 2010 - अभिनव कश्यप

[16.] दामिनी, 30 अप्रैल 1993 - राजकुमार सन्तोषी

[17.] पैडमैन, 9 फरवरी 2018 – आर. बल्कि

[18.] फोर्स, 30 सितम्बर 1999 - निशिकान्त

[19.] बॉर्डर, 13 जून 1997 – जे. पी. दत्ता

[20.] बरेली की बर्फी, 18 अगस्त 2017 - अश्विनी अय्यर तिवारी

[21.] भाग मिल्खा भाग, 11 जुलाई 2013 - राकेश ओम प्रकाश मेहरा

[22.] मैरी कॉम, 5 सितम्बर 2014 - उमंग कुमार

[23.] एम. एस. धोनी, 30 सितम्बर 2017 - नीरज पांडे

[24.] राजा की आएगी बारात, 18 अक्टूबर 1996 - अशोक गायकवाड़

[25.] वांटेड, 18 सितम्बर 2009 - प्रभु देवा

[26.] वास्तव, 7 अक्टूबर 1999 - महेश मांजरेकर

[27.] सरफरोश, 30 अप्रैल 1999 - जॉन मैथ्यू मॉथन

[28.] सुल्तान, 6 जुलाई 2016 - अली अब्बास जफर

[29.] हेट स्टोरी, 3 - 4 दिसम्बर 2017 - विशाल पांडे

[30.] हथियार, 2 नवंबर 2011 - महेश मांजरेकर

11.5 समाचार पत्र

[01.] 6 जून 2019, नवभारत टाइम्स

[02.] 8 जून 2019, नवभारत टाइम्स

[03.] 9 जून 2019, नवभारत टाइम्स

[04.] 10 जून 2019, नवभारत टाइम्स

[05.] 11 जून 2019, नवभारत टाइम्स

[06.] 29 जुलाई 2019, नवभारत टाइम्स

*****

How to cite this article (प्रस्तुत लेख के सन्दर्भ का प्रारूप): कुमारी, मीनू, स्नेह लता, प्रिया, नेहा, अपराजिता एवं शुभ्रा, (2020). युवा वर्ग पर बढ़ता सिनेमा का प्रभाव. *Vantage: Journal of Thematic Analysis*, 1(1): 94-104
DOI: https://doi.org/10.52253/vjta.2020.v01i01.09

© The Author(s) 2020.
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License which permits its use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is cited.